सेवा के साथ शक्तिशाली योग के वायब्रेशन फैलाओ

आज विशेष अपनी मीठी दादी जी की तरफ से वर्तमान समय के वायुमण्डल का समाचार लेकर वतन में जाना हुआ। तो दूर से क्या देखा - बापदादा बहुत बिज़ी थे और बहुत रहमदिल रूप से बापदादा सामने खड़े हो दृष्टि दे रहे थे, बापदादा के सामने अनेकानेक अज्ञानी आत्मायें, काले, गोरे, भारत के ...भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग पौने चक्कर(3/4 सर्किल) के रूप से खड़े थे और बहुत दिल से पुकार रहे थे ओ अल्लाह, ओ गॉड, ओ भगवन.. कृपालु, दयालु, मर्सी, मर्सी....रक्षा करो, रक्षा करो.... भय से, मृत्यु से, दु:खों से छुड़ाओ। मैं आगे बढ़ती गई, तो ऐसे दु:ख भरे आवाज हमें भी सुनाई दे रहे थे, जो सुन-सुन कर बहुत रहम आ रहा था कि इन्हें कैसे बचायें। बापदादा तो बड़े स्नेहमय मूर्त से दृष्टि देते कह रहे थे बच्चे, धीरज धरो, धीरज धरो, यह दु:ख के दिन जाने वाले ही हैं। सभी के चेहरे दु:ख से जैसे भरे हुए थे। कुछ समय के बाद यह दृश्य समाप्त हो गया।

हमने अपने को बापदादा के साथ देखा। बाबा बहुत मधुर सुन्दर मिलन मनाते मुस्कराते बोले, आज फिर क्या सन्देश लाई हो! मैं बोली बाबा आज का दृश्य तो बहुत नया था। सब धर्म वाले आपको पुकार रहे थे। बाबा बोले बच्ची, अब यह जो लड़ाई लग रही है इसमें बहुत देशों की जनता बहुत नाराज है, नाहेक खून का अनुभव करने के कारण कोई सहारा न देख, सहारेदाता को याद कर रहे हैं।

फिर मैंने कहा बाबा, आज दादी जी का संकल्प चल रहा है कि इस वायुमण्डल अनुसार चारों ओर के ब्राह्मणों को जहाँ तहाँ शान्ति की लहर फैलाने के लिए योग के ही प्रोग्राम्स करने चाहिए। तो बाबा मुस्कराते बोले बच्ची, योग का वायब्रेशन तो चारो ओर फैलाना आवश्यक ही है। समय तो दिनप्रतिदिन हलचल का बढ़ना ही है। ऐसे समय के लिए पॉवरफुल योग के द्वारा शक्तिशाली वायब्रेशन फैलाने और सेवा का प्रोग्राम बनाने में बैलेन्स रखना ज़रूरी है। विशेष समय प्रमाण सभी ब्राह्मणों को यही अटेन्शन दिलाना है कि अब एक दो के संस्कार मिलाना और पुराने संस्कार मिटाने है क्योंकि यह संस्कार न मिलना प्रत्यक्षता के बीच मोटा पर्दा है, इससे ही बाप की प्रत्यक्षता छिपी हुई है। इसलिए समय प्रमाण इस धारणा की अभी से आवश्यकता है। आपस में मिलकर सहज संस्कार मिलन की कोई सरल विधि अवश्य निकालनी है और तो सभी बच्चों को बापदादा ने स्वमान और सम्मान का ईशारा दिया ही है। हर एक छोटा बड़ा यह अपनी जिम्मेवारी समझ आगे बढ़ते चलेंगे तो बापदादा की शुभ आश और अपना शुद्ध संकल्प बाप समान बनने का सम्पन्न कर सकेंगे। ऐसे कहते बाबा ने सभी बच्चों को स्नेह सम्पन्न यादप्यार दी और मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।